११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

1

आपकी सबसे गहरी इच्छाओं को कैसे संतुष्ट करें

2

थामस हक्सले नामक जीव वैज्ञानिक के विषय में एक कहानी कही गई, जो एक शहर में देर से पहुँचा जहाँ उसे एक भाषण देना था।

वह टैक्सी के अन्दर कूदा जो कि उस समय की एक घोड़ा गाड़ी थी, और वह चालक पर चिल्लाया, "और अधिक गति बढाओ!"

3

उस आज्ञाकारी चालक ने कोड़ा चलाया और वह वाहन सड़कों पर बहुत तेज रफ्तार से झटके खाते हुए चलने लगा। भयभीत हक्सले अपनी सीट पर आराम से बैठे हुए एक क्षण के लिए संभला, और फिर इतना हिलने के बाद बैठ गया। उसने पुकारा, "सुनो, सुनो क्या तुम जानते हो कि मैं कहाँ जाना चाहता हूँ?" "नहीं, मेरे प्रभु, "चालक ने उत्तर दिया, "परन्तु मैं जितना तेज चला सकता था उतना चला रहा हूँ।"

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

4 इन दिनों बहुत से भयभीत लोग गतिशील हैं। उनके जीवन में बहुत कुछ हो रहा है। वे हमेशा कहीं भी तेज गति से जा रहें हैं। परन्तु सच्चाई यह है, कि बहुत से लोग वास्तव में यह नहीं जानते कि वे कहाँ जा रहे है; वे नहीं जानते कि उनके जीवन किस ओर जा रहे हैं।

5 उचित रूप से यही एक कारण है कि परमेश्वर अपनी अंतिम प्रार्थना बाइबिल की अंतिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य में करता है। १४ वें अध्याय के, ७ वें पद में, यूहन्ना प्रेरित दुनिया से प्रार्थना करता है, जो यीशु के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं वह इन शब्दों में प्रार्थना करता है.....

6 (मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ७)
".....परमेश्वर से डरो; और उसकी महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुंचा है;

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

7

और उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।"

प्रकाशितवाक्य १४ : ७

यदि आप के पास अपने शहर का नक्शा है और आप उसमें एक स्थान ढूंढ़ने के लिए उसका

प्रयोग कर रहे हैं, और वह नक्शा गलत है, तो इससे बहुत अन्तर पड़ता है।

8

किसकी उपासना करें? उसकी उपासना करें जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया प्रत्येक चीजों के सृष्टिकर्त्ता की उपासना करें।

परमेश्वर हमें धीरे चलने के लिए और यह समझ प्राप्त करने के लिए कि हम कहाँ जा रहे हैं, निमंत्रित करता है।

तब हम यह समझ लेंगे कि हमें परमेश्वर ने बनाया था, तो यह हमें इस बात की समझ देता है कि हम यहाँ क्यों हैं और हम कहाँ जा रहे हैं।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

9

परन्तु आज, लोग यह भूल गए हैं कि परमेश्वर विश्व का, हमारी दुनिया का, प्रत्येक चीजों का और इस दुनिया में प्रत्येक प्राणी का सृष्टिकर्त्ता है।

कुछ लोग कहते हैं कि आप बिना कोई शक के बाइबिल पर विश्वास कर सकते हैं दूसरे कहते हैं कि आप नहीं कर सकते।

कौन सही है?

10

(दृश्य)

आज, हजारों लोग यह सोचते हैं कि हम ऐसे ही बढ़ गए। करोड़ों वर्ष पूर्व हम केवल एक ही कोशिका से बढ़े हैं और समुद्री जन्तु में बदले फिर भूमि में पाए गए।

वे सोचते हैं कि सब चीजें संयोग से या दुर्घटना के द्वारा हो गई ये हम समझ नहीं सकते।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

11

परन्तु क्या आप जानते हैं परमेश्वर ने सृष्टिकर्त्ता के रूप में अपने कार्य का हमें चिन्ह दिया है?

उसने हमें कुछ ऐसा दिया है जो कि हमें प्रत्येक सप्ताह यह याद दिलाएगा कि उसने हमें, हमारी दुनिया, और हमारे विश्व को बनाया?

यदि बाइबिल सच्ची है, तो आपका सम्पूर्ण अनन्त भाग्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप उस पर विश्वास करते हैं और उसे ग्रहण करते हैं या नहीं।

आप बाइबिल के विषय में जो विश्वास करते हैं वह यह सब अन्तर करता है कि आप परमेश्वर के विषय में क्या विश्वास करते हैं।

12

वास्तव में, उसने हमें सृष्टि की रचना के सप्ताह के अन्त में यह हर सप्ताह स्मरण रखने के लिए दिया।

परन्तु लगभग सम्पूर्ण दुनिया भूल गई कि यह किस की याद दिलाने वाला है।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

13

(दृश्य)

और उस स्मरण दिलाने वाले के बिना बहुत से यह भूल गए कि वह परमेश्वर ही है जिसने इस दुनिया की सृष्टि की।

इसलिए अपने समय में हम लोगों को चन्द्रमा पर भेदों को ढूंढ़ने के लिए भेजते हैं कि हमारी दुनिया की शुरुआत किस प्रकार हुई।

14

हम शक्तिशाली दूरबीन से अंतरिक्ष में दूर तक देखते हैं, कि हमें कुछ भेद मिल जाए कि किस प्रकार हमारा विश्व आरंभ हुआ। तो आइए हम इस महान पुस्तक बाईबिल जो परमेश्वर का वचन भी कहलाता है, उसको पढ़ते हैं और इसकी सच्चाई का सबूत ढूढंते हैं ताकि इस पर विश्वास किया जा सके।

15

इतना प्रयास और खर्चा और इतनी अधिक रूचि क्यों? क्योंकि हम अपने सबसे बड़े प्रश्नों का उत्तर चाहते हैं। क्या हम विश्व में अकेले हैं? हम यहाँ कैसे पहुँचे? हम यहाँ क्यों है? और हम कहाँ जा रहें है? इस प्रकार खोज जारी है। तबभी सब साथ -साथ, सारे उत्तर एकदम हमारे समक्ष हैं। परन्तु हम एक दुनिया हैं जो भूल गए हैं - हमें अब याद नहीं कि हम कहाँ से आए हैं!

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

16

उस दुनिया को जो भूल गई है, परमेश्वर कहता है, "स्मरण रख - स्मरण रख कि मैं तुम्हारा सृष्टिकर्त्ता हूँ और तुम्हें स्मरण दिलाने की मदद करने के लिए, मैंने तुम्हें एक चिन्ह दिया है - एक चिन्ह!"

17

(दृश्य)
इतिहास में इस समय जब क्रमिक विकास सिखाता है कि हम संयोग का परिणाम हैं, परमेश्वर कहता है "तुम बढ़े नहीं थे मैंने तुम्हें बनाया है!"

18

परन्तु कुछ लोग पूछ सकते हैं, "यह निशान या चिन्ह क्या हैं जो हमें यह याद दिलाता है कि परमेश्वर ने हमको बनाया है?"
स्मरण करिए जब हमने इसका अध्ययन किया था कि परमेश्वर ने सृष्टि के सप्ताह के प्रत्येक दिन के बीच क्या बनाया था?

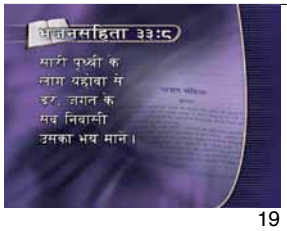

19

(मूलपाठ : भजनसंहिता ३३ : ८ ,९)
सृष्टि की रचना आश्चर्यजनक थी। उसने इसे इतनी जल्दी कैसे बनाया था? बाइबिल इसका उत्तर देती है। "सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें, जगत के सब निवासी उसका भय मानें।"

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

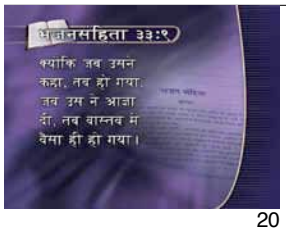

20

"क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया।"

भजनसंहिता ३३ : ८, ९

21

हम यह नहीं समझ सकते, परन्तु परमेश्वर अपने कहे गए वचन के द्वारा चीजों को अस्तित्व में लाने में समर्थ हुआ था।

परमेश्वर के वचन, चाहे कहे गए हों, या बाइबिल में लिखे गए हो उनमें रचना करने के गुण हैं और वे शक्तिशाली हैं!

यह वादा केवल इसी बात को मानने के द्वारा स्वीकार किया जा सकता है कि परमेश्वर ने हमें यह पुस्तक दी है ताकि वह हमें अपनी इच्छा बता सके।

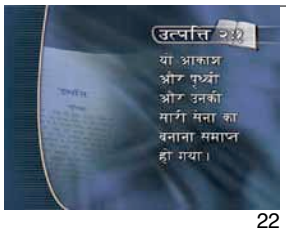

22

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : १)

"यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।"

उत्पत्ति २ : १

23

छः दिनों में सृष्टिकर्त्ता ने दुनिया को बनाया और उसे झाड़ियों और वृक्षों, फूलों और झरनों से सवांरा।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

24

उसने सूर्य की चमक और प्रतापी सूर्यास्त और रात के मनोरंजन के लिए चन्द्रमा को बनाया।

25

परन्तु सब से अच्छा, उसने दो पूर्ण लोगों को बनाया। कितने गर्व की बात है! उनके बनाने वाले ने उन्हें अपने स्वरुप में बनाया! वे पृथ्वी के ऊपर और जो कुछ उसमें हैं उस पर शासन करने के लिए बनाए गए थे!

26

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २७)

"तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया।"

उत्पत्ति १ : २७

27

परन्तु, परमेश्वर की रचना अभी समाप्त नहीं हुई थी! उसके पास एक और चीज बाकी थी जिसे वह करना चाहता था। सावधानीपूर्वक ध्यान दीजिए कि बाइबिल क्या कहती है कि अगले दिन सृष्टि के सातवें दिन क्या हुआ :

28

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : २ -४)

"और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

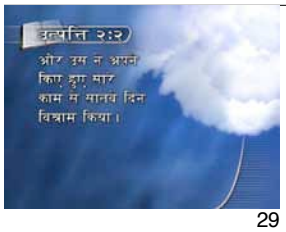

29

और उस ने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।

30

और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।

31

आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए।"

उत्पत्ति २ : २ -□४

32

केवल परमेश्वर ही किसी चीज को पवित्र बना सकता है, और बाइबिल कहती है कि उसने सातवें दिन को पवित्र ठहराया।

33

किसी चीज को पवित्र करने का अर्थ है कि उसे पवित्र कार्य के लिए अलग कर देना। परमेश्वर ने सब्त को दूसरे सारे दिनों से अलग कर दिया। यह पवित्र रखने के लिए अलग किया गया पूर्णरूप से उसके लिए अर्पित कर दिया गया। कुछ ऐसे लोग हैं जो सोचते हैं कि एक दिन से क्या अन्तर पड़ता है? हो सकता है कि यह उदाहरण मदद करे।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

34

एक विवाह से एक स्त्री पवित्र होती है या एक आदमी के लिए अलग की जाती है।

मान लीजिए कि आप की शादी का दिन है आप बहुत उत्तेजित हैं आप कुछ समय से इस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

35

यह भी मान लीजिए आप की होने वाली पत्नी के पास छः बहने हैं। विवाह के उत्सव के समय एक स्त्री और एक पुरूष एक हो जाते हैं। वह अलग हो जाती है। उन सातों में से अब एक नहीं रही। वह पवित्र हो गई। वह विवाह में अपने पति की हो गई।

36

क्या होता यदि विवाह के बाद, आपकी पत्नी की एक बहन कहती, "इससे क्या अन्तर पड़ता है? सातों में से एक से काम चल सकता है। सातों बहनें एक दूसरे की तरह अच्छी हैं।" आप क्या कहते है? क्या इससे अन्तर पड़ता है?

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

37

आपके क्या विचार हैं श्रीमती जी, क्या कोई अन्तर पड़ता है?

बिल्कुल पड़ता है!

पति होने के नाते, आप यह कहेंगे, "मेरी दुल्हन चुनी गई, पवित्र ठहराई गई, अलग की गई, और मेरे लिए अर्पित की गई थी?"

इसलिए परमेश्वर ने एक सामान्य साधारण २४ घन्टे का दिन लिया वह सातवां दिन और इसे चुना और पवित्र ठहराया,

अलग किया और अपने आप को अर्पित किया।

सब्त एक आशीष है, और पवित्र दिन है। परमेश्वर के वचन के अनुसार वह कोई और दिन नहीं परन्तु सातवां दिन है।

38

(मूलपाठ : मरकुस २ : २७,२८)

मसीह कहते है : "सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।

39

इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।"

मरकुस २ : २७, २८

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

40

परमेश्वर ने सब्त का दिन दिया ताकि हम यह स्मरण करने के लिए समय निकाल सके कि हम कोश से नहीं बढ़े। परमेश्वर ने हमें और शेष अद्भुत दुनिया को छः दिनों में बनाया। यह एक पवित्र समय था जब मनुष्य और उसका बनाने वाला एक साथ प्रत्येक सप्ताह अपने प्रेम की प्रतिज्ञा और उपासना ताजा करते थे। प्रत्येक सप्ताह मनुष्य को यह स्मरण रखना था कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को छः दिनों में बनाया और सातवें दिन विश्राम किया।

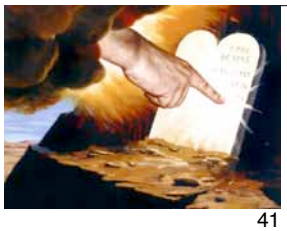
41

परमेश्वर ने जब अपनी उंगली से नियम को लिखा तो उसने मनुष्य को स्मरण रखने के लिए कहा। चौथा नियम परमेश्वर के पवित्र नियमों के बीच में है। उसने मनुष्य जाति को इस दिन को याद रखने के लिए कहा क्योंकि छः दिनों में उसने पृथ्वी, समुद्र और जल के सोते बनाए।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

42

यदि सब्त हमेशा सृष्टि की स्मृति के रूप में रखा जाता तो आज एक क्रमिक विकास पर विश्वास करने वाला, अविश्वासी या शंका करने वाला जीवित नहीं रहता।

जब पृथ्वी पर पाप बढ़ गया, तो मनुष्य यह भूल गया कि वह कहाँ से आया है, और वह यहाँ क्यों है और कहाँ जा रहा है जब ऐसा हो गया, तब वह यह भी भूल गया कि उसे कैसे जीना चाहिए।

43

(दृश्य)

मूसा के समय तक इस्राएल के लोग लगभग पूरी तरह अपने परमेश्वर को भूल गए।

वे मनुष्य के द्वारा बनाई गई मूर्तियों की पूजा करने में डूब गए!

44

(दृश्य)

परमेश्वर ने अद्भुत रीति से उन्हें उनके शत्रुओं से छुड़ाया और जंगल में उनकी रास्ते भर "प्रतिज्ञा की गई भूमि" में पहुँचाने तक अगुवाई की।

इस जंगल में, उसने उनको दो चीजें दिखाई कि वह उनसे सातवें दिन के सब्त के संबंध में क्या करवाना चाहता है जो उसने इस दुनिया के इतिहास के प्रथम सप्ताह में उनके लिए बनाया था।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

45

(दृश्य)

पहले परमेश्वर ने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि वह उनकी परवाह करता है और इसलिए उसने उन्हें मिश्र से बाहर निकालने में अगुवाई की। वे अपने साथ पर्याप्त भोजन नहीं रख सकते थे। शीघ्र ही वे बुड़बुड़ाने लगे क्योंकि उनका भोजन समाप्त हो गया था। समस्त अद्भुत कार्य और दयालुता जो परमेश्वर ने उन्हें दिखाए थे उनकी प्रशंसा उन्होंने नहीं की फिर भी प्रेमी परमेश्वर ने उनके लिए भोजन प्रदान किया।

46

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : ४, ५)

"तब यहोवा ने मूसा से कहा, देखो, मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजन वस्तु बरसाऊंगा।

47

और ये लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन इकटठा करेंगे,

48

इस से मैं उनकी परीक्षा करूंगा, कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं।"

निर्गमन १६ : ४

यह रोटी जिसके विषय में यहाँ कहा गया है उसे सामान्य रूप से मन्ना कहा जाता था।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

49

"और ऐसा होगा कि छठवें दिन जो कुछ वे उस दिन बटोरें उसे तैयार कर रखें,

50

वह भोजन और दिनों से दूना होगा।

निर्गमन १६ : ६

51

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : ६)

"तब मूसा और हारून ने सारे इस्राएलियों से कहा,

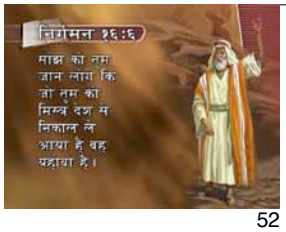

52

सांझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्त्र देश से निकाल ले आया है वह यहोवा है।"

निर्गमन १६ : ६

53

(दृश्य)

रात में जब ओस बैठ जाती थी उस समय मन्ना गिरती थी। भोर के समय जब ओस भाप बनकर उड़ जाती थी तब मन्ना पूरी धरती पर फैल जाती थी। लोग भोर के समय बाहर जाकर उसे बटोर लेते थे और दिन चढ़ने पर शेष मन्ना लोप हो जाती थी। परन्तु ध्यान दीजिए कि सप्ताह के छठवें दिन क्या होता था :

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

54

(मूलपाठः निर्गमन १६ : २१,२२)

"और वे भोर को प्रतिदिन अपने -अपने खाने के योग्य बटोर लेते थे।

55

और जब धूप कड़ी होती थी, तब वह गल जाता था।

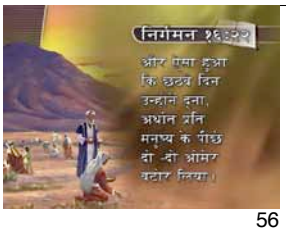

56

और ऐसा हुआ कि छठवें दिन उन्होंने दूना, अर्थात प्रति मनुष्य के पीछे दो -दो ओमेर बटोर लिया।

57

और मंडली के सब प्रधानों ने आकर मूसा को बता दिया।

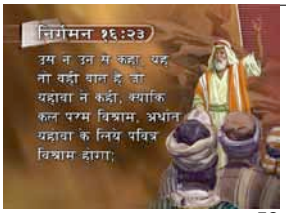

58

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : २३)

"उस ने उन से कहा, यह तो वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि कल परम विश्राम, अर्थात यहोवा के लिये पवित्र विश्राम होगा।

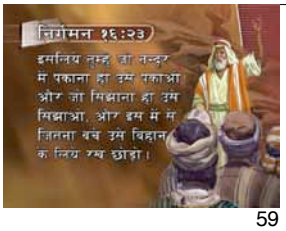

59

इसलिये तुम्हें जो तन्दूर में पकाना हो उसे पकाओ और जो सिझाना हो उसे सिझाओ, और इस में से जितना बचे उसे बिहान के लिये रख छोड़ो।"

निर्गमन १६ : २१ -२३

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

60

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : २५, २६)

"तब मूसा ने कहा, आज उसी को खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्राम दिन है; इसलिये आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा।"

61

छः दिन तो तुम उसे बटोरा करोगें, परन्तु सातवां दिन तो विश्राम का दिन है, उस में वह न मिलेगा।"

पद २५, २६

62

अधिकतम लोग वही करते थे जैसी परमेश्वर ने आज्ञा दी थी, परन्तु कुछ लोग सब्त के दिन मन्ना बटोरने जाते थे। ध्यान दीजिए कि परमेश्वर इसके विषय में क्या कहता है!

63

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : २८ -३०)

"तब यहोवा ने मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगे?

64

देखो! यहोवा ने जो तुम को विश्राम का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है।

65

इसलिये तुम अपने यहां बैठे रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना।"

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

66

लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया।"

निर्गमन १६ : २८ -३०

67

सब्त सृष्टि के समय स्थापित किया गया था और परमेश्वर के लोगों के द्वारा सीने पर्वत पर चढ़ने से पहले पवित्र माना जाता था, जहाँ पर परमेश्वर ने उन्हें दस नियम दिए थे।

68

निर्गमन की यात्रा के तीसरे महीने में, परमेश्वर लोगों को सीने पर्वत पर लाया और वहाँ वह मूसा को दिखाई दिया और उसे संदेश दिया कि वह उसे लोगों के साथ बांटे :

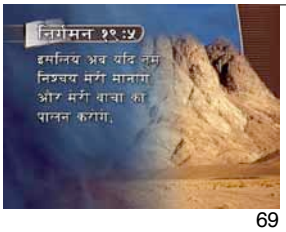

69

(मूलपाठ : निर्गमन १९ : ५, ६)

"इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे,

70

तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है।

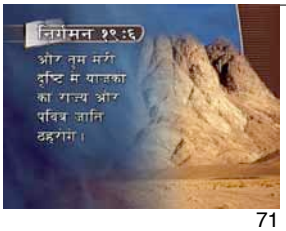

71

और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

72

जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी है वे ये ही हैं।"
निर्गमन १९ : ५, ६

73

परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए सबसे सुन्दर प्रस्ताव बनाया है। यदि वे उसके नियमों और आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो वे विशेष लोग और एक पवित्र जाति होंगे! उन नियमों में से एक नियम यह निश्चित करने के लिए दिया गया था कि उसके लोग अपने सृष्टिकर्ता से उनके संबंध को कभी न भूलें। वास्तव में, यह नियम स्मरण शब्द से आरम्भ होता है।

74

(मूलपाठ : निर्गमन २० : ८ -११)
"तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना,

75

परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्राम दिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना :

76

और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

77

(न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो क्योंकि छः दिन में यहोवा ने

78

आकाश, और पृथ्वी और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया।

79

इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।"

निर्गमन २० : ८ -११

80

सब्त उन दस आज्ञाओं के मध्य में, या हृदय में है।

सब्त का दिन सृष्टि की एक स्मृति है।

वह इतना ही पुराना है जितनी की दुनिया!

यदि परमेश्वर के लोग उसकी आज्ञा का पालन करते हैं और उसकी सृष्टि की स्मृति को याद रखते हैं तो परमेश्वर उन्हें बहुत सी आशीषें देने की प्रतिज्ञा करता है।

81

(मूलपाठ : यशायाह ५८ : १३, १४)

"यदि तू विश्रामदिन को अशुद्ध न करे, अर्थात मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे, और विश्रामदिन को आनन्द का दिन माने,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

82

और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन समझकर माने, यदि तू उसका सम्मान करके उस दिन अपने मार्ग पर न चले,

83

अपनी इच्छा पूरी न करे, और अपनी ही बातें न बोले,

84

तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा ---"

यशायाह ५८ : १३, १४

यदि मनुष्य इस स्मृति को याद रखता, तो बहुत सी कठिनाइयाँ जिसका वह सामना करता है परमेश्वर को भूल जाना व्यर्थ जीवन, रोग से पीड़ा, परिचय का खोना -सब कुछ हल हो जाती। कोई भी क्रमिक विकास का विश्वासी नहीं होता!

85

(दृश्य)

परन्तु यह दुःख की बात है, परमेश्वर के लोग भूल गए। वे उसके पवित्र दिन में उसकी अराधना करना भूल गए,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

86

और यह बात हुए अधिक दिन नहीं हुए थे उससे पहले ही उन्होने काठ और पत्थरों की उपासना करना आरम्भ कर दिया।

वे अपने मूल से दूर खो गए थे!

87

उन सदियों के बीच में जब परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं ने दोबारा से उन का ध्यान सृष्टिकर्त्ता की ओर आकर्षित किया उस समय वे लोग सब्त को मानने के लिए जागृत हो गए थे। यशायाह ने इस बात पर जोर देते हुए कहा है कि परमेश्वर का कभी भी यह अभिप्राय नहीं था कि वह सब्त को केवल यहूदियों तक सीमित रखे।

88

सब्त यहूदी जाति के आने से पहले स्थापित किया गया था। परमेश्वर ने इस आशीष को केवल एक जाति के लिए ही नहीं सीमित किया था।

89

(मूलपाठ : यशायाह ५६ : ६, ७)

" ---जितने विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचे रहते हैं ----

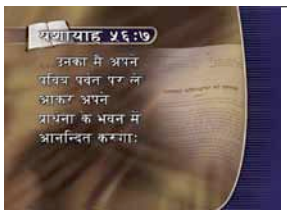

90

उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूंगा:

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

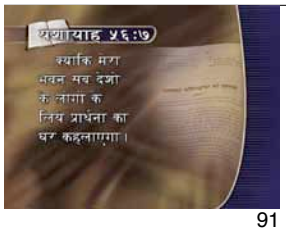

91

---क्योंकि मेरा भवन सब देशो के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा।

यशायाह ५६ : ६,७

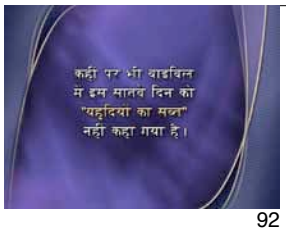

92

बाइबिल में कहीं पर भी इस सातवें दिन को "यहूदियों का सब्त" नहीं कहा गया है।"

यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि यह दिन समस्त मानव जाति के लिए है जब उसने कहा,

93

(मूलपाठ : मरकुस २ : २७)

"---सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।"

मरकुस २ : २७

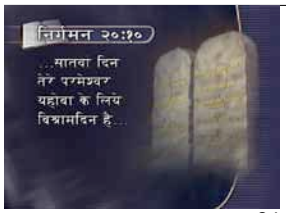

94

(मूलपाठ : निर्गमन २० : १०)

और परमेश्वर ने कहा, "---सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है---"

निर्गमन २० : १०

95

(मूलपाठ : मत्ती १२ : ८)

यीशु ने कहा कि वह "सब्त के दिन का भी प्रभु है।"

(मत्ती १२ : ८) क्योंकि उसने उसे बनाया है।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

96

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १ : १०)

इसीलिए यूहन्ना (प्रकाशक) ने इसे पुकारा है "प्रभु का दिन।"

प्रकाशितवाक्य १ : १०

सब्त केवल सृष्टि और निर्माणकर्त्ता की स्मृति ही नहीं परन्तु परमेश्वर और मनुष्य के मध्य का चिन्ह है।

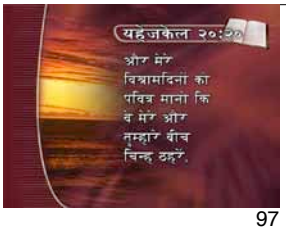

97

(मूलपाठ : यहेजकेल २० : २०)

"और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें,

98

और जिससे तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

यहेजकेल २० : २०

वह परमेश्वर जिसने सात दिन में सृष्टि की रचना करते समय सब्त को पवित्र बनाया उसी ने पापी इंसान को पवित्र बनाया। हमारा सृष्टिकर्त्ता ही हमारा उद्धार करता है!

99

(मूलपाठ : यहेजकेल २० : १२)

"फिर मैं ने उनके लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

100

कि वे जाने कि मैं यहोवा उनका पवित्र करने वाला हूँ।"
यहेजकेल २० : १२

101

(दृश्य)
पृथ्वी में पाप आने से पहले सब्त की स्थापना हो चुकी थी, जब पाप को इस पृथ्वी से हमेशा के लिए निकाल दिया जाएगा तब भी उसे
(सब्त) मनाया जाएगा।

102

(मूलपाठ : यशायाह ६६ : २२,२३)
"क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूं, मेरे सम्मुख बनी रहेगी, यहोवा की यही वाणी है,

103

उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा।"

104

फिर ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे नये चांद के दिन तक और एक विश्रामदिन से दूसरे विश्राम दिन तक,

105

समस्त प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत करने को आया करेंगे, यहोवा का यही वचन है।" यशायाह ६६ : २२, २३

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

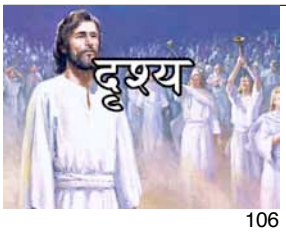

106

(दृश्य)

पूरे अनन्तकाल में, परमेश्वर के लोग अपने सृष्टिकर्त्ता और उद्धारकर्त्ता का आदर करने के लिए सब्त के दिन को लगातार मनाएंगे। फिर भी सब्त का दिन पृथ्वी पर पाप आने से पहले मनाया जाता था, और वह तब भी मनाया जाएगा जब पृथ्वी नई बनाई जाएगी, तो क्या यह उचित नहीं है कि परमेश्वर के लोगों को इसे आज भी मनाना चाहिए?

107

यदि हमारे पास परमेश्वर और सब्त के विषय में कोई प्रश्न है, तो हम देख सकते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने सब्त को मनाया।

108

लूका हमें बताता है कि यीशु सब्त के दिन क्या करता था :

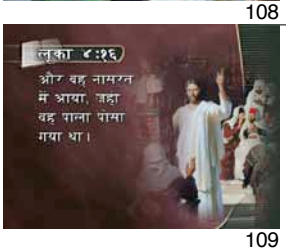

109

(मूलपाठ : लूका ४ : १६)

"और वह नासरत में आया, जहां वह पाला पोसा गया था;

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

110

और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।"

लूका ४ : १६

बाइबिल कहती है कि यह यीशु की रीति थी!

111

वेब्सटर का शब्दकोष कहता है, "सब्त;

112

सप्ताह का सातवां दिन (शनिवार)।"

- वेब्सटर्स न्यू वर्ल्ड डिक्नरी, द्वितीय महाविद्यालय सम्पादन।

113

(दृश्य)

आदम और मूसा के समय के बीच यदि यह दिन बदल दिया गया होता या भुला दिया गया होता, तो परमेश्वर इस बात को याद दिलाता जब उसने सीने पर्वत पर दस आज्ञाएं लिखी थीं।

114

(दृश्य)

यदि मूसा और यीशु के समय के बीच यह दिन खो जाता, तो मसीह निश्चय ही उस रिकार्ड को ठीक कर देता।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

115

(दृश्य)

यदि शिष्यों के जीवनकाल के बीच यह दिन बदल गया होता तो वे निश्चय ही इसके विषय में लिख देते।

116

(दृश्य)

और वास्तव में यहूदी भी, जो समय का सही रिकार्ड रखते थे, अब भी सातवें दिन, या शनिवार की आराधना करते हैं।

117

(दृश्य)

पृथ्वी पर यीशु के जीवनकाल के बीच विश्रामदिन की पहचान का प्रश्न कभी नहीं पूछा गया था। केवल यही वाद विवाद उठा कि उसका पालन वह कैसे करता था। कठिन नियमों के द्वारा रब्बियों ने सब्त के पालन का अर्थ बिगाड़ दिया था। यीशु ने मनुष्य द्वारा बनाई गई आवश्यकताओं को हटाने का और सब्त पालन के अर्थ को दिखाने का प्रयत्न किया।

118

जब उन्होंने यीशु के ऊपर सब्त तोड़ने का दोष लगाया क्योंकि वह उस दिन लोगों को चंगा करता था, तो उसने उत्तर दिया,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

119

(मूलपाठ : मत्ती १२ : १२)

" ----सब्त के दिन भलाई करना उचित है।"

मत्ती १२ : १२

120

(दृश्य)

बाइबिल कहती है कि यीशु ने चंगाई दी और प्रचार किया, सब्त हमें पूर्ण बनाने के लिए है; हमें गलतियों, पक्षपात और स्वार्थ से स्वतंत्र करने के लिए और हमें शान्ति देने के लिए है। यह हमें परमेश्वर की स्वरूपता में लाता है और हमें हमारे सृष्टिकर्त्ता की ओर दोबारा से इगिंत करता है। यही वह कार्य था जो यीशु करने आया था और यही वह कार्य था जो शिष्यों ने किया जब वह उन्हें छोड़कर चला गया।

121

(दृश्य)

सब्त पालन का अर्थ यीशु के अनुयायियों के द्वारा उसकी मृत्यु पर दर्शाया गया। इस मृत्यु की घड़ी में, यीशु के मित्रों ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार विश्राम किया और यीशु के शरीर पर सुगंधित वस्तुएं लगाने के कार्य को सब्त के समय के समाप्त होने के बाद तक छोड़ दिया।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

122

(मूलपाठ : लूका २३ : ५४ -५६)
"वह तैयारी का दिन था, और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था।

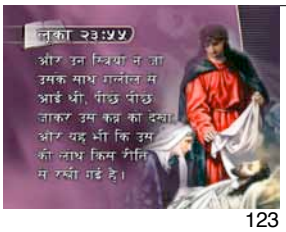

123

और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रखी गई है।

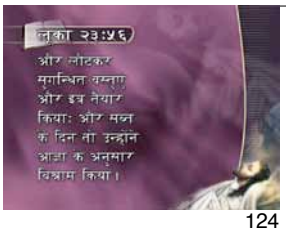

124

और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया: और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।"

लूका २३ : ५४ -५६

125

(दृश्य)सब्त से पहले वाले दिन, यीशु में उनका विश्वास टूट गया। क्रूस पर उसकी क्रूर मृत्यु के वे गवाह थे। उनके सपने और आशाएं अंधेरी कब्र में सो गई, वे उसके मृत शरीर पर सुगन्धित वस्तुएं लगाना चाहते थे।

126

(मूलपाठ : लूका २४ : १)
"----परन्तु सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आई।"

लूका २४ : १

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

127

आइए, हम उन तीन स्मरणीय दिनों की घटनाओं पर ध्यान दें।

128

१. शुक्रवार : यीशु मरा; उन स्त्रियों ने सुगंधित वस्तुएं और इत्र तैयार किया।

129

२. शनिवार (सब्त का दिन) : यीशु ने कब्र में विश्राम किया; उसके अनुयायीयों ने विश्राम किया।

130

३. रविवार (सप्ताह का पहला दिन) : यीशु मृतकों में से जी उठा!

स्त्रियाँ यीशु को सुगन्धित वस्तुएं लगाने आई थीं।

इसमें कोई शंका नहीं हो सकती कि यीशु की मृत्यु का कौन सा दिन सब्त था।

131

(मूलपाठ : यूहन्ना १९ : ३०)

तैयारी के दिन यीशु क्रूस पर लटकाये गये और वे चिल्लाये, "…..पूरा हुआ …."

यूहन्ना १९ : ३०

132

पाप से मुक्ति दिलाने का उसका कार्य पूरा हो गया!

सब्त समाप्त होने तक उसने कब्र में आराम किया

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

133

(दृश्य)

और सप्ताह के पहले दिन रविवार को वह जी उठा। यहाँ तक कि मरने के बाद भी यीशु ने सब्त का पालन किया; सब्त दिनों कब्र में उसने विश्राम किया। जब हम कूस के पास खड़े होते हैं, तो हम यह अनुभव करते हैं कि सात दिन में से कोई एक दिन काम नहीं करेंगे! सब्त से छेड़छाड़ करना सृष्टि, सीनै और कलवरी पर अविश्वास करना होगा!

134

हाँ, यह बात महत्वपूर्ण है कि सात दिन में से कौन सा दिन मनाएं। जार्ज वान्डेमैन नामक एक मसीही लेखक ने लिखा :

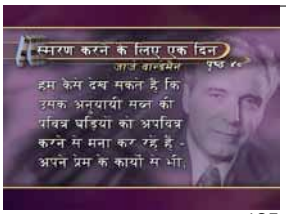

135

"हम कैसे देख सकते हैं कि उसके अनुयायी सब्त की पवित्र घड़ियों को अपवित्र करने से मना कर रहें हैं - अपने प्रेम के कार्यों से भी,

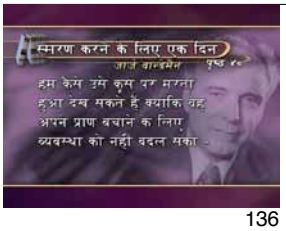

136

हम कैसे उसे कूस पर मरता हुआ देख सकते हैं क्योंकि वह अपने प्राण बचाने के लिए व्यवस्था को नहीं बदल सका -

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

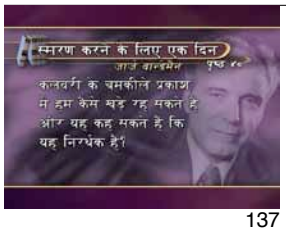

137

कलवरी के चमकीले प्रकाश में हम कैसे खड़े रह सकते हैं और यह कह सकते हैं कि यह निरर्थक है?"

-स्मरण करने के लिए एक दिन, पृष्ठ ४०

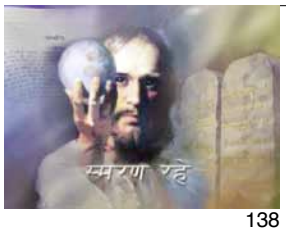

138

सृष्टिकर्त्ता ने कहा "स्मरण रहे" तब भी बहुत -से लोग भूल गए। परन्तु यह परमेश्वर का अभिप्राय नहीं था। यीशु यह आशा करता था कि मसीही लोग हर समय सब्त का पालन करते रहेंगे।

139

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २०)

"और प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।"

मत्ती २४ : २०

140

(दृश्य)

यीशु यह आशा करता था कि ७० ईसवी में जब यरुशलेम का नाश हुआ था, मसीही लोग तब भी सब्त का पालन करते रहेंगे!

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

141

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १७ : १,२)

नया नियम यह रिकार्ड रखता है कि यीशु के अनुयायी पुनरुत्थान के बाद भी सब्त का पालन करते थे:

"वे थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था:

142

और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया।"

प्रेरितों के काम १७ : १,२

अन्य सब्त में जब पौलुस उपदेश दे रहा था, कुछ लोग अपनी प्रार्थना लेकर आए :

143

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १३ : ४२,४४)

"लोग उन से विनती करने लगे, कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाई जाएँ।

144

अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकटठे हो गए।"

प्रेरितों के काम १३ : ४२, ४४

145

यह सच है, प्रेरितों के काम नामक पुस्तक ८४ सभाओं का रिकार्ड रखता है जो पौलुस ने की थी।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

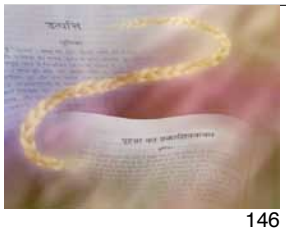

146

उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक सब्त सुनहरे धागे की तरह चल रहा है, जो उनको दर्शाता है जो यीशु से उसके दूसरे आगमन पर मिलने के लिए तैयार है!

147

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : १२)
"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते है।"
प्रकाशितवाक्य १४ : १२

148

(मूलपाठ : यूहन्ना १४ : १५)
यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"
(यूहन्ना १४ : १५) और उनमें से एक आज्ञा हमें बताती है कि "स्मरण करो सब्त के दिन को"

149

यदि हम प्रत्येक सप्ताह के सातवें दिन सब्त को परमेश्वर अपने सृष्टिकर्त्ता की उपासना करते हैं, तो हम कभी नहीं भूलेंगे कि हम कहाँ से आए थे या इस दुनिया को जो हमारे चारो ओर है, किसने बनाया।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

150

यदि हम प्रत्येक सप्ताह सब्त का पालन करते हैं, तो हमें यह सोचने की आवश्यकता नहीं कि हम कौन हैं -विश्व के राजा परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ!

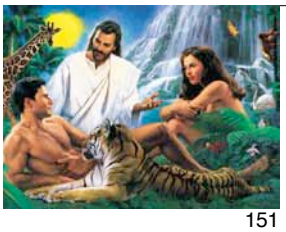
151

हमें यह सोचने की आवश्यकता नहीं होगी कि हम यहाँ कैसे आए। हम यहाँ हैं क्योंकि परमेश्वर हमें चाहता था, क्योंकि उसने हमें बनाया है।

152

वही यीशु जो आप से पूछते हैं कि "स्मरण रखना" आज रात आप की ओर अपना हाथ बढ़ाता है वे हाथ जो आपके पापों के कारण कलवरी पर कीलों से ठोके गए थे और नम्रता से बुलाता है, "मेरे पीछे हो लो"।

153

क्या आप अभी अपने सृष्टिकर्त्ता के पीछे हो लेंगे? क्या आप सब्त को, जिसे उसने आपके लिए बनाया, स्मरण रखने की आज्ञा का पालन करेंगे? क्या आप अब से प्रत्येक सप्ताह उसकी आराधना करेंगे जब उसका सब्त प्रत्येक सातवें दिन आता है? क्या आप यीशु और प्रेरितों की तरह अपने बनाने वाले के सातवें दिन के सब्त को अराधना करेंगे?

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

154

मित्रों, सब्त केवल आराधना के लिए सप्ताह के किसी एक दिन का विषय नहीं हैं।

यह सभी प्रकार से यीशु की आज्ञा मानने का विषय है। यह आदम और हव्वा के साथ खड़े रहने का विषय है जैसा कि उन्होंने पहले सब्त को अदन की वाटिका में आराधना की थी। यह मूसा के साथ परमेश्वर की आज्ञा मानने का विषय है जब परमेश्वर ने कहा था, "सब्त का दिन पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।" यह उसी दिन में उपासना करने का विषय है जैसा कि पुराने नियम के यशायाह, यिर्मयाह, दानिय्येल और समस्त महान विश्वासियों ने किया था। यह पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ प्रत्येक सब्त को समस्त सृष्टि की रचना करने वाले परमेश्वर की प्रशंसा करने का विषय है। प्रकाशितवाक्य के अनुसार यह परमेश्वर के अंतिम समय के उन लोगों का एक भाग होने का विषय है, जो आज्ञाओं का पालन करते हैं। क्या आप यह कहना पसन्द करेंगे, "हाँ यीशु, मैं तेरे साथ खड़ा होऊँगा। मैं तुझे पहला स्थान दूंगा। मैं प्रत्येक रास्ते पर तेरा अनुसरण करूंगा यदि ऐसी आपकी इच्छा है तो अपना हाथ उठाएं जब हम प्रार्थना करते हैं।